चित्रःगूगल से साभार

अभिशाप हो रहे वरदानः
अरविंद के.पांडेय

एक अजीब सा दौर आ गया है
कहना सब कोई है चाहता
पर सुनने वाला ही कोई नहीं
जो कोई सुन भी ले मिन्नतो के बाद
तो फिर उसे समझने वाला कोई नहीं.

अय्याशियों का बाजार
अब बिखरा है हर तरफ
जज्बातों की खरीद फरोख्त का
इसमे लगा है एक मेला सा
पर सोने से मन की कीमत
इसमें रद्दी से भी कम है!

शर्ट, जूतें, टाई, सब है बेशकीमती
बस आदमी की ही कीमत कुछ नहीं
मोबाइल की कीमत में शून्य ढेर सारे
शून्य कर चले हमारी सब संवेदना

ये हाथ में, पर्स मे रहता तो है
पर अपने अजनबी से होते जाते है.

जीना तो मसखरे सा हो ही चला था
अब मरने की खबर भी प्रायोजित सी है
जीना भले ही गुमनामी में रह जाये
पर मरना सनसनीखेज हादसा हो चला
कोई जीता रहा ये तो पता ना चला
मरने की अफवाह पर फैलती है हर तरफ.

भले आदमी है विलुप्ति की डगर पर
ठीक वैसे ही जैसे जंगल, जैसे नदियाँ
होने, ना होने, की इनकी कुछ खबर नहीं
पर हा कैक्टस से चुभते लोग
उगते जा रहे है हर तरफ
जीवन बस अब यूँ हो चला है
कि अभिशाप अब वरदान सा लगे!

एडवोकेट अरविंद के.पांडेय
प्रयागराज